श्री शंकर शिक्षायतन

द्वारा समायोजित राष्ट्रीय वेबिनार

प्रश्नोपनिषद्विज्ञानभाष्य विमर्श

(पं. मोतीलाल शास्त्री के आलोक में)

<u>प्रतिवेदन</u>

श्री शंकर शिक्षायतन द्वारा दिनांक २९ मई २०२० को एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। इस वेबिनार का विषय **प्रश्नोपनिषद्विज्ञानभाष्य विमर्श** था। यह आयोजन सायंकाल ४.३० से प्रारम्भ होकर रात्रि ८.३० बजे सम्पन्न हुआ। मङ्गलाचरण के अनन्तर उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि प्रख्यात वैदिक विद्वान् प्रो. ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने प्रश्नोपनिषद् के प्रथम प्रश्न पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रथम प्रश्न में सृष्टिविषयक जिस प्रजापति का वर्णन किया गया है उसे पं. मोतीलाल शास्त्री ने स्वयम्भू प्रजापति के रूप में व्याख्यायित किया है, जो तप करके रयि और प्राण के मिथुन से सृष्टि का आरम्भ करता है। इस प्रकार उन्होंने प्रथम प्रश्न में उपस्थापित सृष्टिविषयक अवधारणा का पं. मोतीलाल शास्त्री के आलोक में विस्तृत विवेचन किया। उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के आचार्य प्रो. ललित कुमार गौड ने संवत्सर को सृष्टि का मूल कारण बतलाते हुए विज्ञानभाष्य की दृष्टि से उत्तरायण और दक्षिणायन के माध्यम से इसको स्पष्ट किया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्री शंकर शिक्षायतन के समन्वयक तथा संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के संकाय प्रमुख प्रो. सन्तोष कुमार शुक्ल ने प्रश्नोपनिषद् पर प्रकाश डालते बतलाया कि यह प्रश्नोपनिषद् अथर्ववेद का उपनिषद् है। इस उपनिषद् में सृष्टि के स्वरूप विषयक सुकेशा आदि छः ऋषियों के छः प्रश्नों का निरूपण हुआ है जिनका उत्तर पिप्पलाद ऋषि ने दिया है। प्रो. शुक्ल ने प्रश्नोपनिषद् में प्रतिपादित छः प्रश्नों पर प्रकाश डालते हुए उनका निम्नलिखित स्वरूप बतलाया-

प्रथम प्रश्न कत्य ऋषि के प्रपौत्र कबन्धी ऋषि द्वारा पूछा गया है जिसमें समपूर्ण जगत् के परम कारण तत्त्व विषयक प्रश्न किया गया है। अर्थात् कबन्धी ने यह प्रश्न किया है कि इस सम्पूर्ण चराचर जगत् में जो नाना प्रकार के जीव उत्पन्न होते हैं उनके जो सुनिश्चित कारण हैं, वह कौन है?

द्वितीय प्रश्न भार्गव ऋषि का है जिसमें उन्होंने तीन बातें पूछी हैं-१. सांसारिक प्राणियों के शरीर को धारण करने वाले कितने देवता हैं? २.उन देवताओं में से कौन कौन देवता इन प्राणियों को प्रकाशित करने वाले हैं? ३. इन देवताओं में सर्वश्रेष्ठ देवता कौन है? इस प्रकार भार्गव ऋषि के इस प्रश्न का उत्तर देते हुए पिप्पलाद ऋषि ने पञ्चमहाभूतों को धारक देवता तथा पञ्चज्ञानेन्द्रिय, पञ्चकर्मेन्द्रिय एवं मन आदि चार अन्तःकरण को धारक एवं प्रकाशक देवता बतलाते हुए अन्ततः प्राण की सर्वश्रेष्ठता प्रतिपादित की है।

तृतीय प्रश्न में आश्वलायन मुनि द्वारा कुल छः बातें पूछी गयीं हैं-१.प्राण की उत्पत्ति किससे होती है? २. यह प्राण मनुष्य के शरीर में प्रवेश कैसे करता है? ३. यह प्राण स्वयं को विभाजित कर शरीर में किस प्रकार से स्थित रहता है? ४. यह प्राण एक शरीर से दूसरे शरीर में जाते समय पहले शरीर से निकलता कैसे है? ५.यह प्राण इस पाञ्चभौतिक शरीर को धारण कैसे करता है? तथा ६. यह प्राण मन और इन्द्रिय आदि आध्यात्मिक/आन्तरिक जगत् को किस प्रकार धारण करता है?

चतुर्थ प्रश्न गार्ग्य मुनि का है जिसमें उन्होंने महर्षि पिप्पलाद से पाँच बातें पूछी हैं-१. जब मनुष्य गहरी निद्रा में रहता है तो उस समय मनुष्य के शरीर में रहने वाले कौन कौन से देवता शयन करते रहते हैं? २. कौन-कौन देवता जागते रहते हैं? ३. जब हम स्वप्न की अवस्था में रहते हैं तो इनमें से कौन-कौन देवता हमारी स्वप्न की घटनाओं को देखते हैं? ४. निद्रा की अवस्था में सुख का अनुभव किसको होता है? और ५. ये सारे देवता किसके आश्रित रहते हैं?

पञ्चम प्रश्न सत्यकाम द्वारा ऊँकार की उपासना के विषय में किया गया है, जिसमें उन्होंने पिप्पलाद महर्षि के समक्ष यह जिज्ञासा व्यक्त की है कि जो मनुष्य आजीवन ऊँकार की भलीभाँति उपासना में संलग्न रहता है ,उसे उस उपासना के द्वारा किस लोक की प्राप्ति होती है? अर्थात् उस उपासना का फल क्या मिलता है?

षष्ठ प्रश्न सुकेशा ऋषि द्वारा सोलह कलाओं वाले पुरुष के विषय में किया गया है। सुकेशा ने महर्षि पिप्पलाद के समक्ष यह जिज्ञासा प्रकट की है कि उस सोलह कलाओं वाले पुरुष तत्त्व का स्वरूप क्या है, तथा वह पुरुष तत्त्व रहता कहाँ है? जिसके उत्तर में पिप्पलाद ने यह बतलाया है कि जिन परमेश्वर से सोलह कलाओं का समुदाय यह सम्पूर्ण जगत् रूप विराट् शरीर उत्पन्न हुआ है, वे परम पुरुष हमारे इस भौतिक शरीर के भीतर ही विराजमान हैं; उनको खोजने के लिए कहीं अन्यत्र नहीं जाना है।

इस प्रकार प्रश्नोपनिषद् के उपर्युक्त छः प्रश्नों का उल्लेख करते हुए प्रो. शुक्ल ने यह बतलाया कि इन सभी प्रश्नों के निहितार्थ को समझाने के लिए विज्ञानभाष्य के माध्यम से पं. मोतीलाल शास्त्री ने हमें एक विशेष दृष्टि प्रदान की है। पं. मधूसूदन ओझा की वैदिक विज्ञान की दृष्टि को आधार बनाकर पं. मोतीलाल शास्त्री ने इस उपनिषद् के उपर लिखे गये अपने विज्ञानभाष्य के द्वारा इस उपनिषद् में प्रतिपादित इन छः प्रश्नों को समझने के लिए हमें एक नूतन दृष्टिकोण

प्रदान किया है, जिसके आधार पर हम इन प्रश्नों में निहित गूढ तत्त्वों को स्पष्टतया समझ सकते हैं।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. गोपाल प्रसाद शर्मा, विभागाध्यक्ष, वेद विभाग, श्री ला.ब.शा.रा.सं. विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने इस उपनिषद् के छः प्रश्नों तथा वैदिक विज्ञान के महत्त्व को रेखाङ्कित करते हुए कहा कि स्यम्भू,परमेष्ठी तथा सोलह कलाओं का दिग्दर्शन इस उपनिषद् के मन्त्रों में समाहित हैं जिसकी विस्तृत व्याख्या पं. मोतीलाल शास्त्री ने अपने विज्ञानभाष्य में किया है। प्रथम सत्र के विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो. विष्णुपद महापात्र, विभागाध्यक्ष, न्याय विभाग,श्री ला.ब.शा.रा.सं. विश्वविद्यालय, नई दिल्ली , प्रो. रामानुज उपाध्याय, आचार्य, वेद विभाग, श्री ला.ब.शा.रा.सं. विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, प्रो. सुन्दर नारायण झा, आचार्य, वेद विभाग, श्री ला.ब.शा.रा.सं. विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने अपने उद्बोधन में प्रश्नोपनिषद् के विभिन्न प्रश्नों पर पं. मोतीलाल शास्त्री के विज्ञानभाष्य के आलोक में विशद् व्याख्या प्रस्तुत किये।
द्वितीय सत्र की अध्यक्षता करते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की आचार्या प्रो. मीरा द्विवेदी ने इस उपनिषद् में वर्णित सत्य, ऋत एवं अनृत का प्रतिपादन करते हुए बतलाया कि पिण्डभाव सत्य है। अशरीर एवं अहृदय तत्त्व ऋत है तथा जहाँ ऋत एवं सत्य का अभाव होता है वह अनृत कहलाता है। आपः, वायु एवं सोम का प्रतिपादन ऋत के रूप में तथा अग्नि, यम एवं आदित्य को अंगिरा बतलाकर इनका सत्य के रूप में प्रतिपादन किया गया है। द्वितीय सत्र के विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो. रामराज उपाध्याय, आचार्य, पौरोहित्य विभाग, श्री ला.ब. शा.रा.सं. विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, प्रो. मारकण्डेय नाथ तिवारी, विभागाध्यक्ष, सांख्य-योग विभाग, श्री ला.ब. शा.रा.सं. विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, डॉ. धनञ्जयमणि त्रिपाठी, सहायक आचार्य, जामिआ मिलिआ इस्लामिआ विश्वविद्यालय, नई दिल्ली तथा डॉ. ममता त्रिपाठी, सहायक आचार्या, गार्गी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ने प्रश्नोपनिषद् के एक-एक प्रश्नों पर पं. मोतीलाल शास्त्री के विचारों का समीक्षण किया।
गूगल मीट के माध्यम से आयोजित इस कार्यक्रम हेतु ऑनलाइन पंजीकरण कर देश के विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों से लगभग ६०० प्रतिभागियों ने अपनी सहभागिता कर कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम का समापन शान्तिपाठ से हुआ। धन्यवाद ज्ञापन श्री शंकर शिक्षायतन के वरिष्ठ शोध अध्येता डॉ. लक्ष्मीकान्त विमल ने तथा संयोजन डॉ. मणि शंकर द्विवेदी ने किया।